[Conference- Innovation in Music & Dance :January,2015] ISSN- 2350-0530(O) 2394-3629(P)
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v3.i1SE.2015.3405

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

वर्तमान समयानुसार संगीत पाठ्यक्रमों में बदलाव की आवश्यकता : विद्यालयीन शिक्षण प्रणाली के सन्दर्भ में

प्रो. शर्मिला टेलर
हिमानी गुप्ता
संगीत, वनस्थली विद्यापीठ (राजस्थान)

शिक्षा मानव जीवन की एक स्वाभाविक प्रकिया है और मानव जीवन में शिक्षा का महत्त्वपूर्ण स्थान है। मानव को अपने जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु शिक्षा प्राप्त करना अति आवश्यक है। परन्तु केवल किन्हीं पुस्तकों को पढ़कर किसी विषय की जानकारी प्राप्त कर लेने को ही शिक्षा का पूर्ण अर्थ नहीं माना जा सकता बल्कि उस प्राप्त जानकारी का स्मरण करना, मनन करना, उसका अर्थ समझना तथा उसका उपयोग सफलता पूर्वक जीवन में करना ही सही मायनों में शिक्षा है।

शिक्षा का शाब्दिक अर्थ – ''हिन्दी का शिक्षा शब्द संस्कृत की शिक्षा धातु से बना है, जिसका अर्थ है सीख अथवा सीखना। संस्कृत की इसी शिक्षा धातु से एक अन्य शब्द शिक्षण भी बना है, जिसका अर्थ है सिखाना। अपने मूल अर्थ में शिक्षा और शिक्षण के समान अर्थ हो सकते हैं, क्योंकि दोनों शब्द एक धातु से ही बने हैं, परन्तु शिक्षा शब्द अब सीखने और सिखाने दोनों के संयुक्त अर्थ में प्रयोग किया जाता है।''[1]

''अंग्रेजी में शिक्षण को ''ऐजुकेशन'' कहते हैं। यह शब्द लैटिन भाषा के Educeare शब्द से बना है, जिसका अर्थ है बढ़ाना, पालन पोषण करना ;To bring, to raise) ''[2]

भारतीय शिक्षा के मूल तत्व पुस्तक में लेखक लज्जा राम तोमर का कहना है कि '' जो कुछ भी व्यवहार मनुष्य के ज्ञान की परिधि को विस्तृत करे, उसकी अन्तदृष्टि को गहरा करे, उसकी प्रतिक्रियाओं का परिष्कार करे, भावनाओं और क्रियाओं को उत्तेजित करे अथवा किसी न किसी रूप में उसको प्रभावित करे वह 'शिक्षा' ही है। शिक्षा शास्त्र में व्यक्तित्व के सन्तुलित एवं सम्पूर्ण विकास को ही शिक्षा का लक्ष्य माना है।''[3]

विवेकानन्द के अनुसार,

''मनुष्य की अन्तर्निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति ही शिक्षा कहलाती है।''[4]

किसी भी विषय की शिक्षा हो उसमें पाठ्यक्रम की भूमिका महत्त्वपूर्ण होती है क्योंकि ''पाठ्यक्रम का निर्माण शिक्षा के सामान्य तथा विषेष उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए होता है। विद्यार्थियों का शारीरिक, बौद्धिक, मानसिक, नैतिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक विकास किस प्रकार से किया जाए इसके लिए पाठ्यक्रम का निर्धारण किया जाता है। पाठ्यक्रम का एक उद्देश्य विद्यार्थी के व्यक्तित्व को विकसित करना तथा उसके व्यवहार में परिवर्तन लाना भी होता है।''[5]

''पाठ्य क्रम को अभ्यास क्रम भी कहा जाता है। इसमें अभ्यास और उसका क्रम अर्थात् पाठ्य सामग्री का क्रम इस प्रकार का अर्थ निहित है।''[6]

''पाठ्यक्रम अंग्रेजी के करीकुलम का हिन्दी रूपान्तर है। 'करीकुलम' (Curriculum) शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के शब्द 'Currere' 'क्यूररे' से हुई है, जिसका अर्थ है– 'race course' दौड़ का मैदान। इस प्रकार 'पाठ्यक्रम दौड़ का मैदान है, जिस पर बालक लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए दौड़ता है।''[7]

''पाठ्यक्रम समाज की परम्पराओं, आकांक्षाओं, आदर्शों एवं मूल्यों का अनुसरण करता है।''[8]

वास्तव में पाठ्यक्रम एक सीढ़ी के समान है जिस पर चढ़कर विद्यार्थी अपने जीवन के लक्ष्यों की प्राप्ति करता है। परिवर्तन के इस दौर में निरन्तर पाठ्यक्रम में उचित बदलाव होते रहने चाहिए। यदि समाज में परिवर्तनों के चलते शिक्षा के पाठ्यक्रम में यदि उचित बदलाव नहीं किये जाये तो शिक्षा में कुठाएं उत्पन्न होती हैं।

विद्यालयीन स्तर पर संगीत पाठ्यक्रम की स्थिति –

''संगीत में भी ज्ञान वृद्धि के लिए तथा शिक्षा में व्यवस्थितता लाने की दृष्टि से निश्चित पाठ्यक्रम की आवश्यकता होती है।''[9]

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

इसलिए ही सभी विषयों के समान संगीत विषय की शिक्षा में भी पाठ्यक्रम की भूमिका महत्त्वपूर्ण है। उचित पाठ्यक्रम की सहायता द्वारा ही संगीत शिक्षा के उद्देष्यों की प्राप्ति सम्भव है। ''संगीत की सामान्य शिक्षा का उद्देष्य यह है कि सरल रूप से संगीत की बहुमुखी न्यूनतम शिक्षा प्राप्त कर संगीत के आधारभूत तत्वों से विद्यार्थी परिचित हो जाएँ तथा उनकी सांगीतिक प्रतिभा के माध्यम से उनके व्यक्तित्व का विकास हो।''[10] परन्तु वर्तमान समय में विद्यालयों में संगीत का जो पाठ्यक्रम है उससे न तो संगीत शिक्षा के उद्देष्यों की प्राप्ति हो रही है और न ही विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का विकास हो रहा है ऐसा इसलिये है क्योंकि संगीत शिक्षा के पाठ्यक्रम की अनेक समस्याएं हैं जो निम्न हैं–

विद्यालयीन स्तर पर संगीत का पाठ्यक्रम दिशाहीन, दोषपूर्ण एवं नीरस है।
विद्यालयों के संगीत पाठ्यक्रम में अधिकता है जो कि 30 मिनट की कक्षावधि को ध्यान में रखकर नहीं बनाया गया है। उच्चतर माध्यमिक स्तर की 11वीं एवं 12वीं कक्षाओं के संगीत पाठ्यक्रम में रागों की संख्या भी अधिक है। इस स्थिति में पाठ्यक्रम पूर्ण कराने की बाध्यता के कारण शिक्षक कुछ भी अच्छे से नहीं सिखा पाते और न ही विद्यार्थी कुछ अच्छे से सीख पाते है।

विद्यालयीन स्तर पर संगीत पाठ्यक्रम में श्रव्य–दृष्य उपकरणों का प्रयोग सम्मिलित नहीं किया गया है जिससे पाठ्यक्रम नीरस प्रतीत होता है। विद्यार्थियों के लिए मंच प्रदर्शन का भी कोई प्रावधान नहीं है।

''संगीत के सैद्धान्तिक पक्ष को समझने हेतु पाठ्यक्रमों में जो किताबें चलती हैं वो बहुधा स्तरहीन हैं।''[11]
विद्यालयों में संगीत पाठ्यक्रम के अन्तर्गत रागों की संख्या तो अधिक है परन्तु स्वर, लय, ताल आदि के प्रारम्भिक ज्ञान को सम्मिलित नहीं किया गया है।

''सामूहिक संगीत किया में प्रयोग की क्षमता पैदा करने की शुरूआत स्कूलों के प्रारम्भिक यानी नर्सरी स्कूलों, शिशु विहारों, प्राथमिक स्कूलों से होनी चाहिये। अभी तक ऐसे पाठ्यक्रम नहीं बने है।''[12]

''हम पाठ्यक्रमों को शिक्षा की रीढ़ स्वीकारते हैं''[13] परन्तु यह बात संगीत शिक्षा पर इसलिए लागू नहीं होती क्योंकि संगीत शिक्षा के पाठ्यक्रम में अनेक समस्याएँ विद्यमान हैं। संगीत पाठ्यक्रमों को संगीत शिक्षा की रीढ़ साबित करने हेतु पाठ्यक्रम में बदलाव नितान्त आवश्यक है।

विद्यालयीन स्तर पर संगीत पाठ्यक्रम में बदलाव हेतु सुझाव–
विद्याालयों में प्राथमिक, माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक स्तरों पर संगीत के पाठ्यक्रमों में सुधार किया जाना परमावष्यक है। देष भक्ति गीत एवं प्रार्थनाओं के साथ–साथ शास्त्रीय संगीत के पाठ्यक्रम में स्वर, लय, ताल और राग आदि के ज्ञान को भी प्राइमरी स्तर से ही निर्धारित किया जाना चाहिए। सरल अलंकारो का अभ्यास, स्वरों को सुनकर पहचानने का ज्ञान, ताल एवं लय से सम्बन्धित प्रारम्भिक ज्ञान, तबला, हारमोनियम जैसे प्रचलित वाद्यों की जानकारी एवं पहचान, लोक संगीत एवं शास्त्रीय का प्रारम्भिक ज्ञान पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जाना चाहिए।

माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक स्तर के संगीत पाठ्यक्रम में शास्त्रीय संगीत के साथ–साथ लोक संगीत व सुगम संगीत आदि को सम्मिलित किया जाना चाहिए। बेसिक रागों को संगीत शिक्षण के प्रत्येक स्तर के पाठ्यक्रम में सम्मिलित करना चाहिए।

पाठ्यक्रम में रागों और तालों की संख्या बहुत अधिक नहीं होनी चाहिए, और रागों का निर्धारण इस तरह होना चाहिए कि विद्यार्थी अगर एक राग सीखे तो उस राग के निकटवर्ती रागों की भी थोड़ी बहुत जानकारी उसे हो जाये।
पाठ्यक्रम में क्रियात्मक एवं शास्त्र दोनों पक्षों का समावेष होना चाहिए। ''संगीत के सैद्धान्तिक पक्ष के पाठ्यक्रम का निर्माण करते समय काल–क्रम को अवश्य ध्यान में रखना चाहिए ताकि विद्यार्थियों को इतिहास के विभिन्न पहलुओं का शिक्षण ऐतिहासिक विकास–क्रम के अनुसार ही कराया जा सके।''[14]

पाठ्यक्रम में कलाकारों द्वारा प्रस्तुत गायन, वादन के केसेट्स, वीडियो आदि सुनाने या दिखाने के प्रावधान को सम्मिलित करना चाहिए।

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

संगीत पाठ्यक्रम को रोजगारोन्मुख बनाने हेतु उच्चतर माध्यमिक स्तर के पाठ्यक्रम में पार्श्व गायन, रिकॉडिंग, वाद्य संगीत, संगीत–निर्देशन, वाद्ययंत्र– निर्माण एवं मरम्मत, संगीत–शिक्षण आदि का थोड़ा बहुत ज्ञान सम्मिलित किया जाना चाहिए।

विद्यालयीन स्तर पर संगीत की स्थिति में सुधार हेतु यह आवश्यक है कि **विद्यालयीन स्तर से ही संगीत के पाठ्यक्रम में श्रव्य–दृश्य उपकरणों का प्रयोग, रियाज़ पर जोर एवं मंच प्रदर्शन आदि को सम्मिलित किया जाना चाहिए।** जिससे विद्यार्थियों की नींव सदृढ़ हो और संगीत विषय के प्रति विद्यार्थियों की रूचि बढ़े।

संगीत पाठ्यक्रम अधिक एवं बोझिल होने की अपेक्षा रूचिकर एवं रोजगारपरक बने। साथ ही साथ सदैव पाठ्यक्रम पर विचार और आवश्यकता पड़ने पर उसमें बदलाव किया जा सके।

संदर्भ –

1 *डॉ0 सरयू प्रसाद चौबे – शिक्षा दर्शन , दि मैकमिलन कंपनी आफ इंडिया लिमिटेड, दिल्ली, बम्बई, कलकत्ता, मद्रास, 1975, पृ0सं0– 25*
2 *कमला भावे – पूर्व प्राथमिक शिक्षण (सिद्धान्त एवं कार्यप्रणाली) हिंदी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल, 1983*
3 *लज्जा राम तोमर – भारतीय शिक्षा के मूल तत्व, सुरूचि प्रकाषन, नई दिल्ली, 1984*
4 *डॉ0 पूनम दत्ता – भारतीय संगीत शिक्षा और उद्देष्य, राज पब्लिकेशंस, नई दिल्ली 2005 पृ0सं0– 27*
5 *डॉ0 हुकम चन्द – आधुनिक काल में शास्त्रीय संगीत, ईस्टर्न बुक लिंकर्स, दिल्ली 1998 पृ0सं0– 202*
6 *डॉ0 सुरेष गोपाल श्रीखण्डे – हिन्दुस्तानी शास्त्रीय गायन की शिक्षा–प्रणाली, अभिषेक पब्लिकेशन्स, चण्डीगढ़ 1993 पृ0सं0– 215*
7 *संगीत अक्टूबर– 2014, पृ0सं0– 48*
8 *संगीत जून– 2003, पृ0सं0– 15*
9 *डॉ0 सुरेष गोपाल श्रीखण्डे – हिन्दुस्तानी शास्त्रीय गायन की शिक्षा–प्रणाली, अभिषेक पब्लिकेशन्स, चण्डीगढ़ 1993 पृ0सं0– 216*
10 *डॉ0 राधिका षर्मा – भारतीय संगीत को संस्थानों और मीडिया का योगदान, संजय प्रकाशन, दिल्ली 2010 पृ0सं0– 44*
11 *संपादक– डॉ0 अलकनंदा पलनीटकर – शास्त्रीय संगीत शिक्षा : समस्याएँ एवं समाधान, आदित्य पब्लिशर्स, बीना (म0प्र0) 2000 पृ0सं0– 153*
12 *सुभद्रा चौधरी – संगीत संचयन (संगीत और संबद्ध विषयों पर लेखों का संग्रह) कृष्णा ब्रदर्स, महात्मा गांधी मार्ग, अजमेर 1981 पृ0सं0– 18*
13 *राज श्री – सांस्कृतिक शिक्षा के उद्विकास में संगीत का योगदान, राधा पब्लिकेशन्स, दरियागंज, नई दिल्ली 2003 पृ0सं0– 468*
14 *डॉ0 पुष्पेन्द्र षर्मा – संगीत की उच्च स्तरीय शिक्षण प्रणाली एक समीक्षात्मक अध्ययन (हरियाणा प्रदेश) ईस्टर्न बुक लिंकर्स दिल्ली 1992 पृ0सं0– 102*